भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, देहरादून में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग (डीएसटी) द्वारा प्रायोजित सरकारी क्षेत्र में कार्यरत वैज्ञानिकों एवं प्रौद्योगिकीविदों के प्रशिक्षण हेतु राष्ट्रीय कार्यक्रम के अंतर्गत पर्यावरणीय प्रभाव आकलन - साक्ष्य आधारित निर्णय लेने विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू हुआ

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग (डीएसटी) द्वारा प्रायोजित सरकारी क्षेत्र में कार्यरत वैज्ञानिकों एवं प्रौद्योगिकीविदों के प्रशिक्षण हेतु राष्ट्रीय कार्यक्रम के अंतर्गत पर्यावरणीय प्रभाव आकलन-साक्ष्य आधारित निर्णय लेने पर पाँच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद (भा.वा.अ.शि.प.), देहरादून में **06.10.2025** को शुरू हुआ। इसका आयोजन पर्यावरण प्रबंधन प्रभाग, विस्तार निदेशालय, भा.वा.अ.शि.प. द्वारा किया जा रहा है।

इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में महाराष्ट्र, मणिपुर, उत्तर प्रदेश, झारखंड, राजस्थान, तेलंगाना, आंध्र प्रदेश, ओडिशा, छत्तीसगढ़, नई दिल्ली और उत्तराखंड जैसे राज्यों के वैज्ञानिक, प्रौद्योगिकीविद् और अधिकारी भाग ले रहे हैं। प्रतिभागी विभिन्न सरकारी संगठनों जैसे वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर) संस्थान; भारतीय वनस्पति सर्वेक्षण और उसके केंद्र, वेस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड, साउथ ईस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड, भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र (बीएआरसी), भारतीय परमाणु ऊर्जा निगम लिमिटेड (एनपीसीआईएल); केंद्रीय रेशम बोर्ड, उत्तराखंड जल विद्युत निगम लिमिटेड (यूजेवीएनएल) आदि से संबंधित हैं। प्रशिक्षण का संक्षिप्त परिचय पाठ्यक्रम निदेशक और सहायक महानिदेश (प.प्र.), भा.वा.अ.शि.प. डॉ. ए. एन. सिंह ने दिया और धन्यवाद ज्ञापन भा.वा.अ.शि.प. के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. विश्वजीत कुमार ने किया। उद्घाटन सत्र की मेजबानी भा.वा.अ.शि.प. के वैज्ञानिक श्री अजिन शेखर ने की।

कार्यक्रम का उद्घाटन श्रीमती कंचन देवी, भा.व.से., महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प., देहरादून ने किया। उन्होंने विकास के प्रतिकूल प्रभावों का मुकाबला करने के लिए

शमन उपायों के सावधानीपूर्वक क्रियान्वयन का आह्वान किया और साथ ही राष्ट्रीय प्रतिबद्धताओं और सतत विकास के लक्ष्यों पर भी ज़ोर दिया।

भा.वा.अ.शि.प., देहरादून के उप महानिदेशक (विस्तार) डॉ. सुधीर कुमार ने अपने भाषण में पर्यावरण प्रबंधन के क्षेत्र में परिषद की दीर्घकालिक विशेषज्ञता पर प्रकाश डाला, जिसमें पारिस्थितिकी-पुनर्स्थापन और वहन क्षमता अध्ययन शामिल हैं। उन्होंने प्रशिक्षुओं को देश भर के विभिन्न हितधारकों के लिए कई महत्वपूर्ण क्षेत्रों और विषयों पर प्रशिक्षण और क्षमता निर्माण प्रदान करने में भा.वा.अ.शि.प. और उसके संस्थानों की भूमिका से भी अवगत कराया।

उद्घाटन सत्र के बाद, पर्यावरण प्रभाव आकलन (ईआईए) - साक्ष्य आधारित निर्णय लेने से संबंधित विभिन्न विषयों पर होने वाले तकनीकी सत्र आयोजित किए जाने हैं। इसमें भौतिक, जैविक और सामाजिक पर्यावरण आकलन, प्रभाव पूर्वानुमान और पर्यावरण प्रबंधन योजना, नियामक एजेंसियों द्वारा मंजूरी के लिए पर्यावरण प्रभाव आकलन-आधारित निर्णय लेने की प्रक्रियाएँ और विकास परियोजनाओं की मंजूरी के बाद अनुपालन निगरानी की व्यवस्था शामिल होगी।

विभिन्न तकनीकी सत्रों के अलावा, प्रशिक्षण विषयों से संबंधित क्षेत्रीय भ्रमण/प्रदर्शन भी आयोजित किए जाएँगे। भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद (भा.वा.अ.शि.प.), पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारतीय वन्यजीव संस्थान (WII) और भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद - केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान (ICAR-CICFR) के प्रख्यात विषय विशेषज्ञ संबंधित विषयों पर अपने व्याख्यान देंगे। सप्ताह भर चलने वाला यह प्रशिक्षण 10 अक्टूबर, 2025 को समापन सत्र और प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र वितरण के साथ सम्पन्न होगा।

भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद
INDIAN COUNCIL OF FORESTRY RESEARCH AND EDUCATION